

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

*डॉ. सत्यवीर यादव

**बाबूलाल शर्मा

शोध सारांश

शिक्षा समाज की जागरूकता को बदलती है, इसलिए साक्षरता किसी भी क्षेत्र की लिंग संरचना के बदलते प्रारूप के लिए जिम्मेदार है। अध्ययन से पता चला है कि साक्षरता का लिंगानुपात पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसलिए वर्तमान पेपर का उद्देश्य 2011 की जनगणना द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों का उपयोग करके राजस्थान में महिला साक्षरता और लिंग अनुपात के बीच सहसंबंध का विश्लेषण करना है। साक्षरता और लिंगानुपात के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए स्पीयरमैन की रैंक अंतर पद्धति का उपयोग किया जाता है। अध्ययन से पता चलता है कि महिला साक्षरता और लिंगानुपात के बीच संबंध $r = -0.295$ है। यह एक मध्यम नकारात्मक सहसंबंध है। राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात विपरीत दिशा में चला गया है। जिन जिलों में महिला साक्षरता कम है, वहां लिंगानुपात अधिक पाया गया है। कोटा जिले में सबसे अधिक महिला साक्षरता (65.9%) दर्ज की गई है, लेकिन इसका लिंग अनुपात 911 बहुत कम है।

मुख्य शब्द: लिंग-अनुपात, महिला साक्षरता, सहसंबंध।

परिचय

महिला साक्षरता और बाल लिंगानुपात जनसंख्या की दो महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय विशेषताएं हैं। साक्षरता का अर्थ है पढ़ने-लिखने की क्षमता। साक्षरता अलग-अलग संदर्भों से जुड़ी मुद्रित और लिखित सामग्री का उपयोग करके पहचानने, समझने, व्याख्या करने, बनाने, संचार करने और गणना करने की क्षमता है (यूनेस्को, 1917)। सात वर्ष या सात वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा को समझकर पढ़ और लिख सकता है, साक्षर व्यक्ति कहलाता है (भारत की जनगणना, 2011)। लिंग अनुपात का उपयोग प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है जो भारत में महिलाओं की आबादी का पता लगाने के लिए एक मूल्यवान स्रोत है। यह समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रचलित असमानता की सीमा को मापने के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक संकेतक है। (विसारिया, 1972)। मानव जनसंख्या का

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

लिंगानुपात सार्थक जनसांख्यिकीय विश्लेषण में सहायक है। लिंगानुपात बालिकाओं की स्थिति, लिंग भेदभाव, भ्रूण हत्या और भ्रूणहत्या से संबंधित वर्तमान स्थिति को परिभाषित करता है (चांदना, 2008)। गुप्ता और भट्ट (1995) ने बताया है कि शिक्षित माताओं में प्रजनन क्षमता कम होती है, जो उच्च लिंग पूर्वाग्रह के साथ होती है। निःसंतान महिलाओं या केवल एक बच्चे वाले दंपतियों का अनुपात शिक्षा के उच्च स्तर और प्रौद्योगिकी तक पहुंच के साथ बढ़ता है; ऐसे जोड़े संभवतः यह सुनिश्चित करना पसंद करेंगे कि उनका एक बच्चा लड़का हो (पटेल, 2002)। पिछले चार दशकों में घटते लिंगानुपात में सुधार के लिए उच्च साक्षरता आवश्यक है लेकिन पर्याप्त नहीं है (चक्रवर्ती और सिन्हा, 2006)। भारत में जिला पैनल के अनुमान में महिला साक्षरता दर का लिंगानुपात पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है (भट्टाचार्य 2009; भट्टाचार्य और सक्सेना 2015)। मातृ शिक्षा और बाल अस्तित्व में लिंग पूर्वाग्रह के बीच संबंध सामान्य रूप से सकारात्मक है, लेकिन यह भारत में उत्तरी और दक्षिणी राज्यों (बॉर्न और वॉकर 1991) के बीच भिन्न है। मातृ शिक्षा और लैंगिक पूर्वाग्रह के बीच कोई सरल संबंध नहीं है (चेन एट अल. 1981, सेन और सेनगुप्ता 1983, काल्डवेल एट अल. 1989)। एचावर्ती और एज़कुरा (2010) ने माता-पिता की शिक्षा और जन्म के समय लिंगानुपात के बीच संबंधों की बहस की व्यवस्थित रूप से समीक्षा की है। वर्ष 1991 के लिए भारत के जिला-स्तरीय आंकड़ों का उपयोग करते हुए, उन्होंने देखा कि भारत में जन्म और शिक्षा के समय लिंग अनुपात के बीच का संबंध उल्टे यू आकार का है। भारत के जिला-स्तरीय आंकड़ों का उपयोग करते हुए वे परिणामों की पुष्टि करते हैं कि जन्म और शिक्षा के समय लिंगानुपात के बीच संबंध उल्टे यू-आकार का होता है। यह लेख जन्म और शिक्षा में महिला हानि के बीच एक गैर-रेखीय संबंध के संभावित अस्तित्व की जांच करता है। कुमार, मोनू (2013) ने खुलासा किया कि महिला साक्षरता और बाल लिंग अनुपात जनसंख्या की दो महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय विशेषताएं हैं। लिंगानुपात के उत्थान में महिला साक्षरता बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रस्तुत पेपर में, राजस्थान राज्य (2011) में महिला साक्षरता और लिंग अनुपात के सहसंबंध को सामने लाने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक डेटा पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र का चयन

देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित देश का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान का क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी है, जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 10.40% है। राज्य की भौगोलिक सीमा 23°3'उत्तर से 30°12' उत्तर अक्षांश और ग्लोब पर 69°30'पूर्व से 78°17'पूर्व देशांतर है। राज्य में 4 अलग-अलग क्षेत्र हैं, अर्थात्, बंजर पहाड़ियों (थार रेगिस्तान) के साथ पश्चिमी रेगिस्तान, पूर्वी मैदान, अरावली पहाड़ियाँ और दक्षिण-पूर्वी पठार। राज्य की जलवायु अर्ध-शुष्क से लेकर शुष्क और गर्म तक भिन्न-

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

भिन्न है। राज्य का पश्चिमी भाग, जिसमें थार रेगिस्तान (जिसे ग्रेट इंडियन रेगिस्तान भी कहा जाता है) शामिल है, अपेक्षाकृत शुष्क और बंजर है, जबकि दक्षिण-पश्चिमी भाग में भूमि गीली, पहाड़ी और अधिक उपजाऊ है। औसत वार्षिक तापमान 0°C से 49°C के बीच होता है और औसत वार्षिक वर्षा 500 मिमी से लगभग 750 मिमी के बीच होती है। वर्षा बहुत कम, अत्यधिक अनिश्चित और परिवर्तनशील होती है। राज्य में कई नदियाँ बहती हैं जिनमें चम्बल, बनास, माही और लूनी शामिल हैं। राज्य में 33 जिले हैं और 2011 की जनगणना के अनुसार, इसकी जनसंख्या 68.55 मिलियन है, जो भारत की जनसंख्या का 5.66 प्रतिशत है, जिसमें से 35550997 पुरुष और 32997440 महिलाएं हैं। लिंगानुपात में प्रति हजार पुरुषों पर 928 महिलाएं दर्ज की गईं, जो राष्ट्रीय औसत 933 से कम है। राजस्थान में साक्षरता दर 67.06% है, जिसमें 79.19% पुरुष साक्षरता और 52.12% महिला साक्षरता का अंतर है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान पेपर के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. राजस्थान राज्य में महिला साक्षरता दर के स्थानिक प्रारूप का अध्ययन करना।
2. राजस्थान राज्य में लिंगानुपात के स्थानिक प्रारूप का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में महिला साक्षरता के स्थानिक प्रारूप और लिंगानुपात के बीच सहसंबंध का विश्लेषण करना।

संमक सकलन और कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन भारत की जनगणना, 2011 और विभिन्न सरकारी आंकड़ों से एकत्र किए गए माध्यमिक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में महिला साक्षरता और लिंग अनुपात के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए स्पीयरमैन की रैंक अंतर पद्धति का उपयोग किया जाता है। सरल सांख्यिकीय पद्धति के आधार पर राजस्थान के जिलों को पांच श्रेणियों में बांटा गया है यानी बहुत उच्च, उच्च, मध्यम, निम्न और बहुत निम्न। जिसकी सहायता से डेटा का विश्लेषण किया जाता है और प्राप्त परिणामों को आर्क जीआईएस सॉफ्टवेयर की सहायता से मानचित्रों के रूप में स्थानिक रूप से दर्शाया जाता है। स्पीयरमैन का रैंक सहसंबंध गुणांक एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग ताकत और दिशा (नकारात्मक या) को सारांशित करने के लिए किया जा सकता है

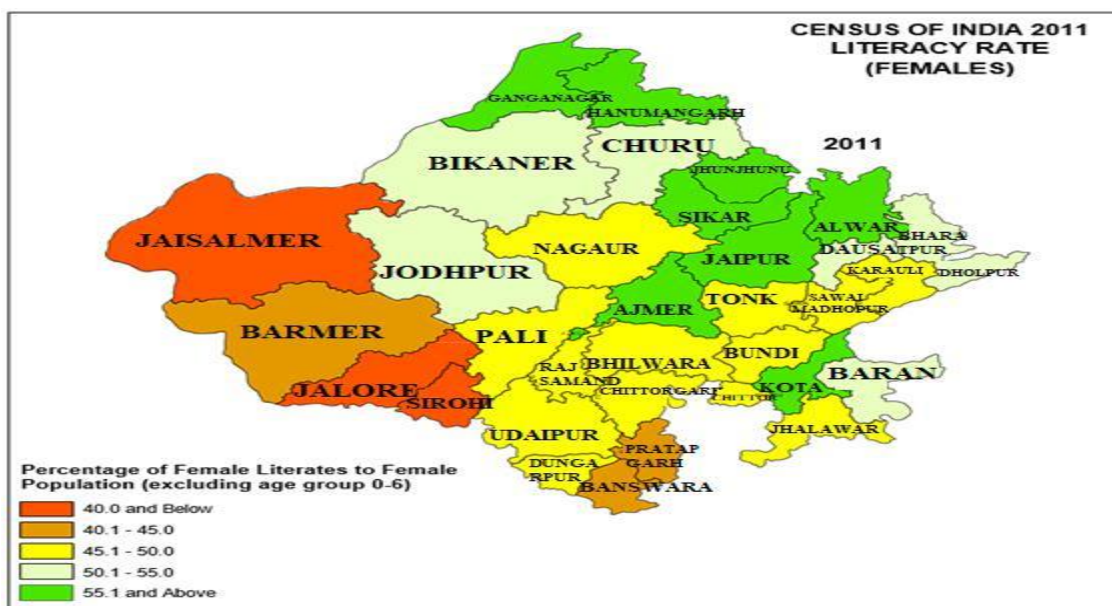
राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

दो चरों के बीच संबंध - महिला साक्षरता दर और लिंग अनुपात

जहाँ दो चरों की रैंकों के बीच का अंतर है, अवलोकनों की कुल संख्या है। स्पीयरमैन का सहसंबंध गुणांक युग्मित डेटा के बीच एक मोनोटोनिक संबंध की ताकत का एक सांख्यिकीय माप है। परिणाम हमेशा 1 और माइनस 1 के बीच होगा यानी $-1 < \rho < 1$. दो चर के बीच संबंध की तीव्रता की डिग्री को सहसंबंध के गुणांक के साथ मापा जाता है। वे इस प्रकार हैं:

- $\pm .00-.19$ - "बहुत कम सकारात्मक/नकारात्मक सहसंबंध"
- $\pm .20-.39$ - "कम सकारात्मक/नकारात्मक सहसंबंध"
- $\pm .40-.59$ - "मध्यम सकारात्मक/नकारात्मक सहसंबंध"
- $\pm .60-.79$ - "उच्च सकारात्मक/नकारात्मक सहसंबंध"
- $\pm .80-1.0$ - "बहुत उच्च सकारात्मक/नकारात्मक सहसंबंध"



स्रोत: स्व-रचित

चित्र 1: राजस्थान में महिला साक्षरता दर का स्थानिक प्रारूप

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

विश्लेषण और चर्चा

राजस्थान में महिला साक्षरता दर का स्थानिक प्रारूप

पूरे राजस्थान में 2011 में महिला साक्षरता दर 52.11% थी। पूरे राज्य में महिला साक्षरता का स्थानिक वितरण असमान है।

1. बहुत उच्च महिला साक्षरता दर - कोटा, जयपुर, झुंझुनूं, अजमेर, अलवर, गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में बहुत अधिक महिला साक्षरता दर 55.1 प्रतिशत और उससे अधिक दर्ज की गई, शैक्षिक सुविधाओं की उच्च संख्या, उच्च शहरीकरण के कारण।, परिवहन और संचार का विकास इत्यादि।

2. उच्च महिला साक्षरता दर - जिन जिलों में साक्षरता दर 50.1 से 55 प्रतिशत के बीच है उन्हें इस श्रेणी में शामिल किया गया है। चूरू, बीकानेर, जोधपुर, बारां, भरतपुर, धौलपुर और दौसा जिलों में उच्च साक्षरता दर्ज की गई।

3. मध्यम महिला साक्षरता दर - जिन जिलों में साक्षरता दर 45.1 से 50 प्रतिशत के बीच है, वे निम्न महिला साक्षरता क्षेत्र हैं। पाली, राजसमंद, नागौर, भीलवाड़ा, टोंक, बूंदी, झालावाड़, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, सवाईमाधोपुर और करोली जिलों में मध्यम साक्षरता दर्ज की गई।

4. निम्न महिला साक्षरता दर - जिन जिलों में महिला साक्षरता सीमा 40.1 से 45 प्रतिशत है उन्हें निम्न श्रेणी में शामिल किया जाता है। बाड़मेर, प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा जिलों में कम साक्षरता दर्ज की गई।

5. बहुत कम महिला साक्षरता दर - जैसलमेर, जालौर और सिरोही जिलों में बहुत कम साक्षरता (40% और उससे कम) दर्ज की गई।

लिंगानुपात का स्थानिक प्रारूप

पूरे राजस्थान में 2011 में प्रति हजार पुरुषों की जनसंख्या पर महिलाओं की संख्या 928 थी। लेकिन जिला स्तर पर लिंगानुपात जिले-दर-जिले 846 से 994 तक भिन्न-भिन्न है। सभी जिलों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:

1. अति उच्च लिंगानुपात- जिन जिलों का लिंगानुपात 976 तथा उससे अधिक है उन्हें अतिउच्च श्रेणी में शामिल किया जाता है। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, पाली, राजसमंद जिलों में बहुत अधिक लिंगानुपात दर्ज किया गया।

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

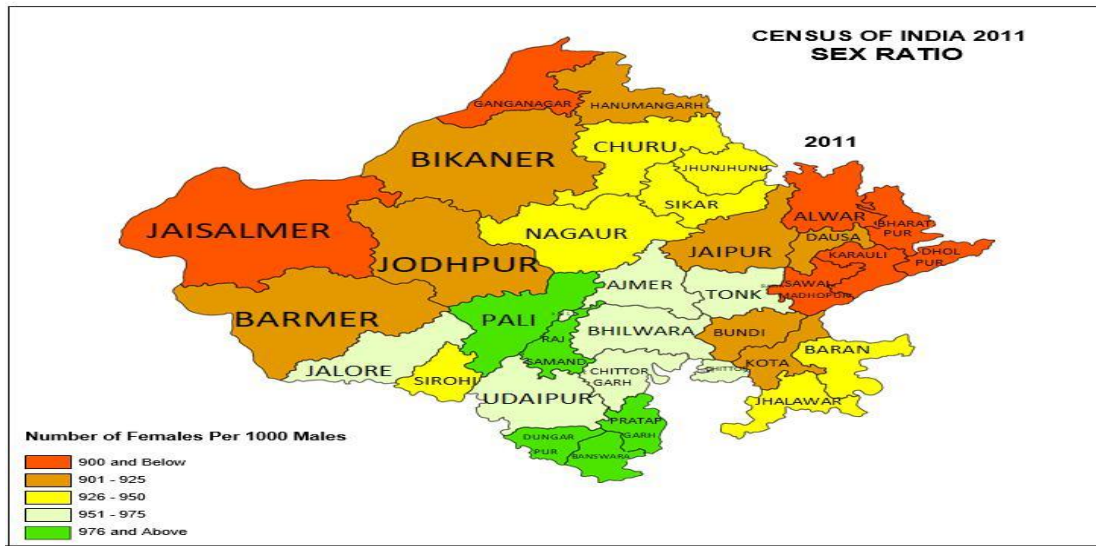
2. उच्च लिंगानुपात - जिन जिलों में लिंगानुपात 951 से 975 तक होता है उन्हें उच्च श्रेणी में शामिल किया जाता है। जालोर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, अजमेर, टोंक और भीलवाड़ा जिलों में उच्च लिंगानुपात दर्ज किया गया।

3. मध्यम लिंगानुपात - जिन जिलों का लिंगानुपात 926 से 950 तक है उन्हें मध्यम श्रेणी में शामिल किया गया है। सिरोही, नागौर, झुंझुनूं, चूरू, झालावाड़ और बारां जिलों में मध्यम लिंगानुपात दर्ज किया गया है।

4. निम्न लिंगानुपात - जिन जिलों में लिंगानुपात 901 से 925 है उन्हें निम्न श्रेणी में शामिल किया गया है। बूंदी, हनुमानगढ़, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर तथा कोटा और दौसा जिलों में लिंगानुपात कम दर्ज किया गया।

5. बहुत कम लिंगानुपात - जैसलमेर, गंगानगर, धौलपुर, करौली, भरतपुर, अलवर और सवाईमाधोपुर जिलों में बहुत कम लिंगानुपात (900 और नीचे) दर्ज किया गया है।

राजस्थान में लिंगानुपात कम होने के निम्नलिखित कारण हैं:



स्रोत: स्व-रचित

चित्र 2: राजस्थान में लिंगानुपात का स्थानिक प्रारूप

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

निष्कर्ष

यह देखा गया है कि स्पीयरमैन रैंक अंतर विधि का उपयोग करके राजस्थान राज्य में महिला साक्षरता और लिंग अनुपात के बीच कम और नकारात्मक सहसंबंध यानी $\rho = -0.295$ है। राजस्थान राज्य में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात विपरीत दिशा में चला गया है। जिन जिलों में लिंगानुपात कम है, वहां लिंगानुपात अधिक पाया गया है

महिला साक्षरता. कोटा जिले में सबसे अधिक महिला साक्षरता (65.9%) दर्ज की गई है, लेकिन इसका लिंगानुपात बहुत कम है

जयपुर जिले में महिला साक्षरता दर (64%) दूसरे स्थान पर है, यहां लिंगानुपात 910 बहुत कम है। राज्य का सबसे पिछड़ा जिला जालोर जिला है, जहां महिला साक्षरता दर बहुत कम 38.5% है। हालांकि, इसका लिंगानुपात बहुत अधिक 952 है। पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता और समान व्यवस्था को बदलने के लिए राज्य अधिकारियों से तत्काल कार्रवाई और जन जागरूकता की आवश्यकता है। लैंगिक समानता के बिना, समाज सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों और उनकी पूर्ण विकास क्षमता को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होगा।

*प्रोफेसर

सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेर बारी झुंझुनू

**शोधार्थी

भूगोल विभाग

स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड एजुकेशन सिंघानिया विश्वविद्यालय
पचेर बारी झुंझुनू (राज.)

संदर्भ

1. बराकाडे, ए.जे. और सुले, बी.एम. 2012. महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में साक्षरता और लिंग अनुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण। सामाजिक विकास, 1(4).
2. भट्टाचार्य, पी.सी. 2009. कुछ भारतीय राज्यों में प्रतिकूल लिंगानुपात पर। इंडियन जे जेंड स्टड. 19:469-480. भट्टाचार्य, पी.सी. और सक्सेना, वी. 2015. भारत में बाल और किशोर लिंग अनुपात के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक: ए
3. जिला-स्तरीय डेटा के साथ अनुदैर्घ्य विश्लेषण। अर्थशास्त्र विभाग, प्रबंधन और भाषा स्कूल, हेरियट वाट विश्वविद्यालय। हेरियट-वाट विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र चर्चा पत्र। 2015-03.

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

4. बॉर्न, के.जी. और वॉकर, एम. 1991। भारत में लड़कों और लड़कियों की मृत्यु दर पर माताओं की शिक्षा का अंतर।
5. पॉपुल. स्टड. 45(2):203-219.
6. कैल्डवेल, जे.सी. रेड्डी, पी.एच. और काल्डवेल, पी. 1989. जनसांख्यिकीय परिवर्तन के कारण। यूनिवर्सिटी ऑफ़ विस्कॉन्सिन प्रेस, मैडिसन।
7. चक्रवर्ती, एल.एस. और सिन्हा, डी. 2006। भारत में बाल लिंग अनुपात में गिरावट के निर्धारक: एक अनुभवजन्य जांच।
8. म्यूनख विश्वविद्यालय. एमपीआरए पेपर 7602।
9. चंदना, आर.सी. 2008. जनसंख्या का भूगोल: अवधारणाएँ, निर्धारक और पैटर्न, कल्याणीप्रकाशक, नई दिल्ली।
10. चैन, एल.सी. हक, ई. और डिसूजा, एस. 1981. ग्रामीण बांग्लादेश में भोजन और स्वास्थ्य देखभाल के पारिवारिक आवंटन में लिंग पूर्वाग्रह।
11. पोपुल देव रेव. 7(1):55-70.
12. गुप्ता, एम.डी. एवं भट्ट, पी.एन.एम. 1995. भारत में तीव्र लिंग पूर्वाग्रह: प्रजनन क्षमता में गिरावट का परिणाम। जनसंख्या और विकास अध्ययन के लिए हार्वर्ड केंद्र। वर्किंग पेपर नंबर 95.02.
13. गुप्ता, एम.डी. 1987। ग्रामीण पंजाब, भारत में बच्चियों के खिलाफ चयनात्मक भेदभाव। पॉपुल. देव. प्रका0वा0 13:77-100.
14. एचावर्री, आर. ए. और एज़कुरा, आर. 2010. जन्म के समय लिंग अनुपात में शिक्षा और लिंग पूर्वाग्रह: भारत से साक्ष्य।
15. जनसांख्यिकी। 47:249-268.
16. भारत, वन राज्य रिपोर्ट। 2019 खण्ड-ii-राजस्थान। 222 पी.पी.
17. कुमार, एम. 2011. महिला साक्षरता और बाल लिंग अनुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2(4):65-73

राजस्थान में महिला साक्षरता एवं लिंगानुपात के बीच सहसंबंध: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सत्यवीर यादव एवं बाबूलाल शर्मा

18. पटेल, वी. 2002. नई सहस्राब्दी की महिलाओं की चुनौतियाँ। ज्ञान बुक्स, दिल्ली, पृष्ठ 70।
19. सेन, ए. और सेनगुप्ता, एस. 1983. ग्रामीण भारतीय बच्चों का कुपोषण और लिंग पूर्वाग्रह। इकोन पॉलिट वीकली। वार्षिक संख्या 18.
20. यूनेस्को. 1917. साक्षरता को परिभाषित करने वाली जीएएमएल पांचवीं बैठक। <http://en.unesco.org>.
21. विसारिया, पी.एम. 1972. भारत की जनसंख्या का लिंगानुपात, मोनोग्राफ नंबर 10, नई दिल्ली: रजिस्ट्रार जनरल का कार्यालय।